



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरिभूमि	10-9-22	9	2-8

**एचएयू द्वारा विकसित  
किस्मों की अन्य प्रदेशों  
में भी मांग : कुलपति**

हरिभूमि न्यूज 11 अक्टूबर

**हकृवि ने विकसित की जई की दो नई किस्में, हरियाणा सहित उत्तर  
पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों को होगा लाभ**

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व माचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई के लिए अनुमति दी गई है।

**जई की नई किस्मों की यह है विशेषताएं**

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 किंटन/एकड़ व सूखे चारे की औसत पैदावार 138 किंटन/एकड़ प्रति हेक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 किंटन/एकड़ प्रति हेक्टेयर है जबकि फूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 किंटन/एकड़ प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म टेलिंगाबोरपरियम लोक सपोर्ट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। कृषि मंडलियाराय के अधिष्ठाता डॉ. परम के. पारुज ने बताया एचएफओ 806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 किंटन/एकड़ प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म के बीज की औसत पैदावार कर्नाटक दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 किंटन/एकड़ प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म की फूड प्रोटीन की औसत पैदावार दक्षिणी जोन में 5.5 व पर्वतीय जोन में 7.1 किंटन/एकड़ प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म फास्टरी मिट्टियों बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।



**इन वैज्ञानिकों ने विकसित की हैं ये किस्में**

इन किस्मों को विकसित करने में चार अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. पोंगाट, मीनक्षी बेदी, रमेश शिंदर, एच.के. पट्टन, सुचयन आर्य, रंजित पट्टा, पद्मी कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, नीरज खरोड, बलविंदर पाल सिंह, उतपाल व बजरंग ताल शर्मा का योगदान रहा है।

हिसार।  
चारा  
अनुभाग के  
वैज्ञानिकों  
के साथ  
कुलपति  
प्रो. बी.आर.  
काम्बोज।

**विकसित किस्मों की  
मांग बढ़ी : काम्बोज**

हकृवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकृवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए नया की बात है। इस उपलक्ष्य के लिए चार अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और मन्त्रिमंडल में भी अपने प्रयास जारी रखने का आग्रह किया।

- प्रो. बी.आर. काम्बोज  
कुलपति, हकृवि



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार, पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	10.9.22	4	1-2



चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

## हकृवि ने जई की 2 नई किस्में की विकसित

हिसार, 9 सितम्बर (भ्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की 2 नई उन्नत किस्में एच.एफ.ओ. 707 व एच.एफ.ओ. 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एच.एफ.ओ. 707 दो कटाई, जबकि एच.एफ.ओ. 806 एक कटाई वाली किस्म है।

उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एच.एफ.ओ. 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी

### इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान

इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एच.एफ.ओ. 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्र प्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुसंसित की गई हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
भास्कर भास्कर	10.9.22	3	4-5

## एचएयू ने जई की दो नई किस्में विकसित कीं

भास्कर न्यूज | हिस्सार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्म एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

एचएयू के वाइस चांसलर प्रो. बी.आर. काम्बोज ने बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत

उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई के लिए अनुशंसित की गई हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

उज्ज्वल समाचार

दिनांक

10.9.22

पृष्ठ संख्या

5

कॉलम

1-3

### एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशों में भी मांग: काम्बोज

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा जई की दो नई किस्में विकसित, विभिन्न राज्यों के किसानों को होगा लाभ



चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज।

हिसार, 9 सितम्बर (विरेन्द्र वर्मा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई

की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुशंसित की गई है।

कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अर्थात् देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकूवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकूवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आह्वान किया।

इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	10.9.22	2	3-4

## एचएयू : जई की नई किस्मों से पशुओं को मिलेगा अधिक प्रोटीन हरियाणा समेत अन्य राज्यों के किसानों को होगा लाभ

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में विकसित की हैं। एचएफओ 707 व एचएफओ 806 नाम से विकसित की गई इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा अधिक है। साथ ही पाचकता अधिक होने के कारण पशुओं के लिए बहुत अच्छी मानी गई हैं।

जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि केंद्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई के लिए अनुशंसित किया गया है। जई की इन दोनों किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के

### एचएफओ 806 किस्म

कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एसके पाहुजा ने बताया एचएफओ 806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसकी औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि एचएफओ 707

किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 क्विंटल और सूखे चारे की औसत पैदावार 135 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है, कूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

वैज्ञानिकों डॉ. डीएस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश जिंदरल, एसके पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
आज समाज	9.09.2022	--	--

## एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशों में भी मांग: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा जई की दो नई किस्में विकसित, हरियाणा सहित उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों को होगा लाभ  
प्रवीण कुमार

हिसार: पौधों पर नुस्खा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के राध अनुभाग ने जई की दो नई किस्में विकसित की हैं। ये किस्में 707 व एचएयू 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्में से बहुत लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व फायदेमंदता अधिक होने के कारण वे पशुओं के लिए बहुत उपयुक्त हैं।

जई की एचएयू 707 को कटाई वाली किस्म जबकि एचएयू 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के



राध अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।

आज समाज

राज्य में केन्द्रीय शोध परिषद की विस्तारित पर जई की एचएयू 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जिलों (हरियाणा, राजस्थान व उत्तराखण्ड) जबकि एचएयू 806 को देश के पश्चिमी जिलों (केरल, तमिलनाडु, केरल, आन्ध्रप्रदेश व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जिलों

(हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर विज्ञान हेतु अनुसंधान की गई है।

कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई कटाई की किस्मों का न केवल हरियाणा अतिरिक्त देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हरियाणा

द्वारा विकसित किस्मों की मात्रा अन्य प्रदेशों में भी लक्ष्य बढ़ती जा रही है। यह हरियाणा के उत्तर पश्चिमी राज्य के लिए लाभ की बात है।

उन्होंने इस उपसंहार के लिए राध अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और पौधों में भी अपने प्रयास जारी रखने का आग्रह किया।

### जई की नई किस्मों की यह है विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान विभाग डॉ. जी.एम. काम्बोज ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएयू 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 मिटल व नुस्खे चारे की औसत पैदावार 185 मिटल प्रति हेक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 मिटल प्रति हेक्टेयर है जबकि कुल प्रोटीन की पैदावार 19.4 मिटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म हरियाणा-पश्चिमी जिलों के लिए उपयुक्त प्रतीती है।

कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारी डॉ. एन.के. चट्टोज ने बताया एचएयू 806 किस्म की बीज की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जिलों में 295.3 मिटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म के बीज की औसत पैदावार जम्मू, पश्चिमी जिलों में 9.5 व पर्वतीय जिलों में 23.9 मिटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म की कुल प्रोटीन की औसत पैदावार पश्चिमी जिलों में 5.5 व पर्वतीय जिलों में 7.1 मिटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म कटाई किस्मों के लिए उपयुक्त प्रतीती है।

### इन वैज्ञानिकों ने विकसित की हैं ये किस्में

इन किस्मों की विकसित करने में राध अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. जी.एम. काम्बोज, रीता देवी, शोभा सिद्ध, एन.के. चट्टोज, साधन जॉर्ज, रीता चंदा, सुनी पुनर्वती, नवीन कुमार, नीरज शर्मा, दलीप चत सिंह, सत्यज, व ब्रजेश चत राय का योगदान रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	10.09.2022	--	--

विश्वविद्यालय द्वारा जई की दो नई किस्में विकसित, हरियाणा सहित उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों को होगा लाभ

# हकूवि की विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशों में भी मांग : कुलपति

सवेरा न्यूज/सुरेंद्र सोढी  
हिसार, 9 सितंबर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण वे पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड)



चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों के साथ कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ।

जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर विजाई हेतु अनुशंसित की गई है।

कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकूवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा

रही है। यह हकूवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयत्न जारी रखने का आह्वान किया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 किंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 किंटल प्रति हेक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार

23.8 किंटल प्रति हेक्टेयर है जबकि कूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म हेल्थिम्नोस्पोरियम लीफ स्पॉट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। इन वैज्ञानिकों ने विकसित की है ये किस्में इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मीनाक्षी देवी, योगेश्वर निंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर चाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक हिंसार	10.09.2022	--	--

### एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशों में भी मांग: कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई

जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुशंसित की गई हैं।



कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकूवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है।

विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सूमाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनस्थान समाचार	09.09.2022	--	--

## | हिसार : एचएयू वैज्ञानिकों ने विकसित की जई की दो नई किस्में, अन्य प्रदेशों में भी मांग

09 Sep 2022 18:36:47



हरियाणा सहित उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों को होगा लाभ

हिंसा, 09 सितम्बर (दिस.)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएयू-707 व एचएयू-806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने शुक्रवार को बताया कि इन किस्मों को विकसित करने में चार अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डीएस फोगट, श्रीमती देवी, योगेश जितल, रामके पाटूजा, लखवाम आर्य, रविश शंकरा, पम्प्री कुमारी, लखन कुमार, तीरज खरोड़, दलविंदर पास सिंह, लनघात, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

उन्होंने बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएयू-707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएयू-806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजघन में केंद्रीय बीज संस्थिति की स्थापना पर जई की एचएयू-707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जिले (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखण्ड) जबकि एचएयू-806 को देश के दक्षिणी जिले (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जिले (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, जम्मू व कश्मीर) के लिए राज्य पर विचारों के लिए अनुसंधान की गई है।

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएयू-707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 किग्रा प्रति हेक्टेयर व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 किग्रा प्रति हेक्टेयर है जबकि लूब प्रोटीन की पैदावार 19.4 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म टेल्मिनथोस्पोरियस लीफ स्पॉट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।

कृषि महाविद्यालय के अधिकाता डॉ. रामके पाटूजा ने बताया एचएयू-806 किस्म की दक्षिणी जिले में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जिले में 295.2 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म के बीज की औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जिले में 9.5 व पर्वतीय जिले में 23.9 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म की लूब प्रोटीन की औसत पैदावार दक्षिणी जिले में 5.5 व पर्वतीय जिले में 7.1 किग्रा प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म पाउडरी मिल्यूयू बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।

दिनस्थान समाचार/राजेश्वर/संजीव





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

त्रिपुरा 21 सितम्बर

दिनांक

09.09.2022

पृष्ठ संख्या

--

कॉलम

--

## हकृवि ने जई की दो नई उन्नत किस्मों विकसित की

कुलपति प्रो. बी.आर.  
काम्बोज बोले,  
एचएयू द्वारा विकसित  
किस्मों की अन्य प्रदेशों  
में भी मांग



चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्मों एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय बीज समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब,

राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडू, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर विआई हेतु अनुशंसित की गई है। कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अपितु देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकृवि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकृवि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है।

उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चार अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आह्वान किया।

### जई की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं

विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 किंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 किंटल प्रति हेक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 किंटल प्रति हेक्टेयर है जबकि क्लूड प्रोटीन की पैदावार 19.4 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म हेल्मन्थोस्पोरियम लीफ स्पॉट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया एचएफओ 806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 किंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म के बीज की औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 किंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म की क्लूड प्रोटीन की औसत पैदावार दक्षिणी जोन में 5.5 व पर्वतीय जोन में 7.1 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म पाठडरी मिलड्यू बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।

### इन वैज्ञानिकों ने विकसित की हैं ये किस्में

इन किस्मों को विकसित करने में चार अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. फोगाट, मोनाक्षी देवी, योगेश जिंदल,

एस.के. पाहुजा, सत्यवान आर्य, रविश पंचटा, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, नीरज खरोड़, दलविंदर पाल सिंह, सतपाल, व बजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा	09.09.2022	--	--

### एचएयू द्वारा विकसित किस्मों की अन्य प्रदेशों में भी मांग : कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यून

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के द्वारा अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्में एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं। देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने यह जानकारी देते हुए बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ 707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राज्यस्तरीय व केंद्रीय जीव संशोधन संस्थानों पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिनाई हेतु



अनुमति को गई है। कुलपति ने कहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की गई फसलों की किस्मों का न केवल हरियाणा अंतर्गत देश के अन्य राज्यों के किसानों को भी लाभ हो रहा है। हकूषि द्वारा विकसित किस्मों की मांग अन्य प्रदेशों में भी लगातार बढ़ती जा रही है। यह हकूषि के साथ हरियाणा राज्य के लिए गर्व की बात है। उन्होंने इस उपलब्धि के लिए चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों को बधाई दी और भविष्य में भी अपने प्रयास जारी रखने का आग्रह किया। विश्वविद्यालय के अनुसंधान

निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने जई की नई किस्मों की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे चारे की औसत पैदावार 696 किंटल व सूखे चारे की औसत पैदावार 135 किंटल प्रति हेक्टेयर है। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. एस.के. पाहुजा ने बताया एचएफओ 806 किस्म की दक्षिणी जोन में हरे चारे की औसत पैदावार 376.4 व पर्वतीय जोन में 295.2 किंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म के धोक की औसत पैदावार क्रमशः दक्षिणी जोन में 9.5 व पर्वतीय जोन में 23.9 किंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म की उच्च प्रोटीन की औसत पैदावार दक्षिणी जोन में 5.5 व पर्वतीय जोन में 7.1 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म पाठशाली मिल्ड्यू बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है। इन किस्मों को विकसित करने में चारा अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डी.एस. भोगाट, मोनाली देवी, योगेश चिंदल, एस.के. पाहुजा, सत्यपाल आर्ष, रविश पंत, पम्मी कुमारी, नवीन कुमार, वीरज खरोड़, दलचिंदर पाल सिंह, यशपाल, व चजरंग शाल शर्मा का योगदान रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जम. २५२	09.09.2022	--	--

देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से होगा लाभ

### हकृवि वैज्ञानिकों ने जई की दो नई उन्नत किस्मों की विकसित

**नम-सौर न्यूज ३३ 02 सितंबर**  
हिसार। चौधरी चरण हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के चार अनुभाग ने जई की दो नई उन्नत किस्मों एचएफओ 707 व एचएफओ 806 विकसित की हैं।

देश के उत्तर पश्चिमी, दक्षिणी और पर्वतीय राज्यों के किसानों व पशुपालकों को जई की इन किस्मों से बहुत लाभ होगा। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बताया कि इन दोनों किस्मों में प्रोटीन की मात्रा व पाचनशीलता अधिक होने के कारण ये पशुओं के लिए बहुत उत्तम हैं। जई की एचएफओ

707 दो कटाई वाली किस्म जबकि एचएफओ 806 एक कटाई वाली किस्म है। उन्होंने बताया भारत सरकार के राजपत्र में केन्द्रीय जीन समिति की सिफारिश पर जई की एचएफओ 707 किस्म को देश के उत्तर पश्चिमी जोन (हरियाणा, पंजाब, राजस्थान व उत्तराखंड) जबकि एचएफओ 806 को देश के दक्षिणी जोन (तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक व आंध्रप्रदेश) और पर्वतीय जोन (हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू व कश्मीर) के लिए समय पर बिजाई हेतु अनुसंधित किया गया है।



इन वैज्ञानिकों ने विकसित की हैं ये किस्में

इन किस्मों को विकसित करने में चार अनुभाग के वैज्ञानिकों डॉ. डीएन फोगाट, मीनावी देवी, योगेश जिंदन, एसके पाटुजा, सरकाबान आर्य, रविश पंधरा, परमेश कुमारी, नवीन कुमार, वीरज शरोड़, दलविंदर चाल सिंह, सतपाल, व कजरंग लाल शर्मा का योगदान रहा है।

**जई की नई किस्मों की यह हैं विशेषताएं**  
विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने बताया कि एचएफओ 707 किस्म की हरे घारे की औसत पैदावार 696 किंटल व सूखे घारे की औसत पैदावार 135 किंटल प्रति हेक्टेयर है। इसकी बीज की औसत पैदावार 23.8 किंटल प्रति हेक्टेयर है जबकि कुल प्रोटीन की पैदावार 19.4 किंटल प्रति हेक्टेयर है। यह किस्म ए लिमान्थोस्पोरियम लीफ सर्पेंट बीमारी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी है।